पाठ 35

1. जब परमेश्वर ने मूसा को अपनी दस आज्ञाएँ दीं, तो उसने मूसा को उसके लिए कुछ बनाने की आज्ञा भी दी।यह क्या था?

-परमेश्वर ने मूसा को उसके लिए एक तम्बू बनाने की आज्ञा दी।

2. क्या परमेश्वर को रहने के लिए घर की जरूरत है?

-नहीं।

3. परमेश्वर को रहने के लिए घर की आवश्यकता क्यों नहीं है?

-क्योंकि ईश्वर आत्मा है।

-क्योंकि परमेश्वर हर समय हर जगह हैं।

4. परमेश्वर ने इस्राएलियों के साथ क्या समझौता किया था?

-यदि इस्राएली उसकी सब आज्ञाओं का पालन करते, तो परमेश्वर उन्हें आशीष देता, परन्तु यदि इस्राएली उसकी सब आज्ञाओं का पालन नहीं करते, तो परमेश्वर उन्हें दण्ड देता।

5. क्या इस्राएली परमेश्वर की सभी आज्ञाओं का पालन करने में सक्षम थे?

-नहीं।

6. क्या परमेश्वर जानता था कि इस्राएली उसकी सभी आज्ञाओं का पालन करने में सक्षम नहीं थे?

-हां।

7. अपनी एक आज्ञा को भी तोड़ने के लिए परमेश्वर की सजा क्या है?

-अनन्त अग्नि की झील में मृत्यु।

8. परमेश्वर ने इस्राएलियों के लिए बचने का क्या मार्ग प्रदान किया था?

-जब इस्राएलियों ने पाप किया और परमेश्वर की एक आज्ञा को तोड़ा, तब इस्राएली तम्बू में जाकर पशुओं का लोहू ले आते थे।

9. जब वह जानवरों का लहू देखेगा तो परमेश्वर क्या करेगा?

-जब परमेश्वर जानवरों के खून को देखेगा, तब तक वह इस्राएलियों को तब तक दण्ड देने से रोकेगा जब तक कि पाप का बेहतर भुगतान नहीं किया जाता।

10. परमेश्वर कैसे चाहता था कि मूसा और इस्राएली तम्बू का निर्माण करें?

-ठीक वैसा ही जैसा परमेश्वर ने कहा था।

11. उन दो कमरों के नाम क्या थे जिन्हें परमेश्वर ने मूसा को तम्बू में बनाने की आज्ञा दी थी?

-पवित्र कक्ष और परम पवित्र कक्ष।

12. उस विशेष सन्दूक का क्या नाम था जिसे परमेश्वर ने मूसा को परमपवित्र कक्ष में बनाने और रखने की आज्ञा दी थी?

-वाचा का सन्दूक।

13. परम पवित्र कक्ष और पवित्र कक्ष को विभाजित करने के लिए पर्दे का क्या अर्थ था?

-पर्दा इस्राएलियों को यह सिखाने के लिए था कि वे पाप के कारण परमेश्वर से अलग हो गए हैं।

14. परमेश्वर ने इस्राएलियों को उस पशु के सिर पर हाथ रखने की आज्ञा क्यों दी जिसे वे बलि करेंगे?

-इस्राएली ने जानवर के सिर पर हाथ रखकर परमेश्वर को स्वीकार किया कि उसने पाप किया है और मर जाना चाहिए, लेकिन यह कि परमेश्वर जानवर की मौत को स्वीकार करेगा, न कि उसकी मौत।

15. क्या जानवरों का लहू इस्राएलियों के पापों का भुगतान करने में सक्षम था?

-नहीं।

16. फिर परमेश्वर इस्राएलियों से उनके पापों के लिए पशु बलि करने के लिए क्यों कह रहा था?

-परमेश्वर इस्राएलियों को सिखा रहे थे कि पाप की सजा मृत्यु है।

17. जब वह जानवरों का लहू देखेगा तो परमेश्वर क्या करेगा?

-जब परमेश्वर जानवरों के खून को देखेगा, तब तक वह इस्राएलियों को तब तक दंडित करना बंद कर देगा जब तक कि खून का बेहतर भुगतान नहीं किया जाता।

18. जब वह दिन आया जब परमेश्वर ने हारून को परमपवित्र स्थान में प्रवेश करने के लिए चुना, तो परमेश्वर ने हारून को अपने साथ क्या ले जाने की आज्ञा दी?

-परमेश्वर ने हारून को एक जानवर के खून को परम पवित्र कक्ष में ले जाने की आज्ञा दी।

19. यदि हारून ने परमेश्वर की बात मानी, और वाचा के सन्दूक पर लहू छिड़का, तो परमेश्वर क्या करेगा?

-जब तक पाप का बेहतर भुगतान नहीं किया जाता तब तक परमेश्वर इस्राएलियों के पापों की सजा को एक और वर्ष के लिए रोक देगा।

-जब मूसा सीनै पर्वत पर परमेश्वर से बातें कर रहा था, तब इस्राएली पर्वत की तलहटी में क्या कर रहे थे?

आइए पढ़ें निर्गमन 32:1-6

1- जब लोगों ने देखा कि मूसा को पहाड़ से उतरने में इतनी देर हो गई है, तो वे हारून के पास इकट्ठे हो गए, और कहने लगे, “आ, हमारे लिए

देवता बना, जो हमारे आगे आगे चलेंगे। यह संगी मूसा जो हमें मिस्र से निकाल ले आया है, हम नहीं जानते कि उसे क्या हुआ है।"

2-हारून ने उन्हें उत्तर दिया, "जो सोने की बालियाँ तेरी पत्नियों, बेटों और बेटियों ने पहनी हैं, उन्हें उतारकर मेरे पास ले आना।"

3-तब सब लोग अपनी बालियां उतार कर हारून के पास ले आए।

4-उसने जो कुछ वे उसे सौंपे थे, ले लिया और उसे एक बछड़े के आकार में एक मूर्ति के रूप में बनाया, उसे एक उपकरण के साथ बनाया। तब उन्होंने कहा, हे इस्राएल, ये तेरे देवता हैं, जो तुझे मिस्र से निकाल लाए हैं।

5 यह देखकर हारून ने बछड़े के साम्हने एक वेदी बनाई, और कहा, कि कल यहोवा के लिथे पर्ब्ब होगा।

6-अत: दूसरे दिन लोग सवेरे उठे और होमबलि और मेलबलि चढ़ाए। इसके बाद वे खाने-पीने के लिए बैठ गए और मौज-मस्ती करने के लिए उठे।

-इस्राएली पहाड़ की तलहटी में क्या कर रहे थे?

-इस्राएलियों ने सोने से एक बछड़ा बनाया था, और वे उसे दण्डवत करते थे।

-इस्राएलियों को परमेश्वर ने जो पहली आज्ञा दी थी वह क्या थी?

-कि केवल ईश्वर ही सभी लोगों का ईश्वर है।

-क्या इस्राएली परमेश्वर के सामने कुछ और रख रहे थे?

-हां।

-दूसरी आज्ञा क्या थी जो परमेश्वर ने इस्राएलियों को दी थी?

-कि कोई भी मूर्ति न बनाए और न ही उसकी पूजा करे।

-क्या इस्राएलियों ने मूर्ति बनाकर उसकी पूजा की?

-हां।

-कुछ ही दिनों पहले, इस्राएलियों ने कहा था कि वे परमेश्वर की सभी आज्ञाओं का पालन करेंगे।

-परन्तु अब इस्राएली उन पहली दो आज्ञाओं को तोड़ रहे थे जो परमेश्वर ने उन्हें दी थीं।

-इस्राएलियों ने परमेश्वर को फिरौन और मिस्रियों पर दस विपत्तियां भेजते देखा था।

-इस्राएलियों ने परमेश्वर को लाल समुद्र को अलग करते देखा था ताकि वे समुद्र के बीच से गुजर सकें।

-इस्राएलियों ने परमेश्वर को फिरौन और उसकी सेना को लाल समुद्र में नष्ट होते देखा था।

-इस्राएलियों ने परमेश्वर को स्वर्ग से बटेर और मन्ना भेजते देखा था।

-इस्राएलियों ने परमेश्वर को चट्टान से पानी देते हुए देखा था।

-अब, इस्राएली सोने के बछड़े की पूजा कर रहे थे, और कह रहे थे कि यह सोने का बछड़ा था जो उन्हें मिस्र से बाहर ले गया था।

-क्या परमेश्वर को पता था कि इस्राएली सोने के बछड़े की पूजा कर रहे थे?

आइए पढ़ें निर्गमन 32:7-8

7 तब यहोवा ने मूसा से कहा, नीचे जा, क्योंकि तेरी प्रजा के लोग जिन्हें तू मिस्र से निकाल ले आया है, भ्रष्ट हो गए हैं।

8 वे जो आज्ञा मैं ने उनको दीं, वे शीघ्रता से फेर गए, और अपने आप को बछड़े के आकार की मूरत बना लिया है। उन्होंने उसे दण्डवत् किया, और

उसके आगे बलि चढ़ाई, और कहा है, कि हे इस्राएल, तेरे देवता ये हैं, जो तुझे मिस्र देश से निकाल ले आए हैं।

-क्या परमेश्वर को पता था कि इस्राएली सोने के बछड़े की पूजा कर रहे थे?

-हां।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों को सोने के बछड़े की पूजा करते देखा।

-परमेश्वर सब कुछ देखता है।

-परमेश्वर ने आदम और हव्वा को वह फल खाते देखा जिसे उसने न खाने की आज्ञा दी थी।

-परमेश्वर ने कैन को हाबिल को मारते देखा।

-परमेश्वर ने सदोम और अमोरा के दुष्ट लोगों के पाप को देखा।

-परमेश्वर ने देखा कि यूसुफ के भाइयों ने उसे मिस्र की गुलामी में बेच दिया था।

-परमेश्वर सभी पापों को देखता है, और वह सभी पापों से घृणा करता है।

-क्या परमेश्वर इस्राएलियों से क्रोधित था?

आइए पढ़ें निर्गमन 32:9-10

9- “मैं ने इन लोगों को देखा है,” यहोवा ने मूसा से कहा, “और वे हठीले लोग हैं।

10 अब मुझे अकेला छोड़ दे, कि मेरा कोप उन पर भड़क जाए, और मैं उनका नाश करूं। तब मैं तुझे एक महान राष्ट्र बनाऊँगा।”

-परमेश्वर इस्राएलियों पर बहुत क्रोधित हुआ।

-परमेश्वर इस्राएलियों से इतना क्रोधित हुआ कि वह उन्हें नष्ट करना चाहता था।

-तब मूसा ने परमेश्वर से क्या कहा?

आइए पढ़ें निर्गमन 32:11-14

11-परन्तु मूसा ने अपके परमेश्वर यहोवा से अनुग्रह मांगा। "हे यहोवा," उसने कहा, "तेरा कोप तेरी प्रजा पर क्यों भड़केगा, जिन्हें तू बड़ी सामर्थ और बलवन्त हाथ से मिस्र से निकाल लाया है?

12-मिस्र के लोग क्यों कहें, 'वह उन्हें बुरी नीयत से निकाल लाया, कि उन्हें पहाड़ों पर घात करें, और पृथ्वी पर से मिटा डालें'? अपने भयंकर क्रोध से फिरो; झुक जाओ और अपनी प्रजा पर विपत्ति न डाल।

13 अपने दास इब्राहीम, इसहाक और इस्राएल को स्मरण करो, जिन से तुम ने अपके ही शपय खाकर कहा था, कि मैं तुम्हारे वंश को आकाश के तारोंके नाईं अनगिनत करूंगा, और वह सारी भूमि जो मैं ने उन से देने की प्रतिज्ञा की है, मैं तुम्हारे वंश को दूंगा; उनका भाग सदा बना रहेगा।'"

14-तब यहोवा ने पछताया, और अपनी प्रजा पर वह विपत्ति न डाली, जिसकी उस ने धमकी दी थी।

-परमेश्वर ने सभी इस्राएलियों को नष्ट क्यों नहीं किया?

-क्योंकि मूसा ने ईश्वर से प्रार्थना की कि उन्हें नष्ट न करें।

-इस्राएलियों को नष्ट न करने के लिए परमेश्वर को समझाने के लिए मूसा ने क्या कहा?

-मूसा ने कहा कि अगर ईश्वर इस्राएलियों को नष्ट कर देता, तो मिस्रवासी कहते कि ईश्वर ने उन्हें मिस्र से बाहर निकाल कर उन्हें मार डाला।

-मूसा ने यह भी कहा कि परमेश्वर अब्राहम, इसहाक और याकूब से किए गए अपने वादे को पूरा करेगा कि उनके कई वंशज होंगे जो एक महान लोग बनेंगे।

-क्योंकि मूसा ने परमेश्वर से प्रार्थना की, परमेश्वर ने इस्राएलियों को नष्ट नहीं किया।

-फिर, मूसा सीनै पर्वत पर वापस चला गया।

-जब मूसा सीनै पर्वत की तलहटी में पहुंचा तो उसने क्या किया?

आइए पढ़ें निर्गमन 32:15-19

15-मूसा मुड़ा, और साक्षीपत्र की दोनों पटिया हाथ में लिये हुए पहाड़ पर से उतर गया। वे आगे और पीछे दोनों तरफ खुदे हुए थे।

16-पटियाएँ परमेश्वर की कृति थीं; यह लेखन परमेश्वर का लेखन था, जो पटियाओं पर उकेरा गया था।

17 यहोशू ने लोगों के चिल्लाने का शब्द सुनकर मूसा से कहा, छावनी में युद्ध का शब्द है।

18-मूसा ने उत्तर दिया: "यह विजय की आवाज नहीं है, यह हार की आवाज नहीं है; मैं गाने की आवाज़ सुनता हूँ।"

19 जब मूसा छावनी के पास पहुंचा, और बछड़े और नाचते हुए देखा, तब उसका कोप भड़क उठा, और पटियाओं को पहाड़ की तलहटी पर तोड़कर टुकड़े टुकड़े कर दिया।

-मूसा इस्त्राएलियों पर इतना क्रोधित हुआ कि उसने परमेश्वर की आज्ञाओं की पत्यर की दोनों पटियाओं को नीचे गिराकर तोड़ डाला।

-फिर, मूसा ने क्या किया?

आइए पढ़ें निर्गमन 32:20

20 और मूसा ने उनके बनाए हुए बछड़े को लेकर आग में फूंक दिया; तब उस ने उसको पीसकर उसका चूर्ण बनाया, और उसे जल पर बिखेर दिया, और इस्राएलियोंको पिलाया।

-मूसा ने सोने के बछड़े को नष्ट कर दिया, सोने को पीसकर चूर्ण बना लिया, चूर्ण को जल पर बिखेर दिया, और इस्राएलियों को पीने को विवश किया।

-क्योंकि मूसा ने पत्थर की उन दो पटियाओं को तोड़ दिया जिन पर परमेश्वर ने दस आज्ञाएँ लिखी थीं, परमेश्वर ने मूसा से क्या करने को कहा?

आइए पढ़ें निर्गमन 34:1-2

1 यहोवा ने मूसा से कहा, पहिली पटियाओं के समान पत्यर की दो पटियाओं को छेनी, और उन पर वे वचन लिखूंगा जो पहिली पटियाओं पर थे, जिन्हें तू ने तोड़ा।

2-सुबह को तैयार रहना, और फिर सीनै पर्वत पर चढ़ जाना। अपने आप को वहाँ पहाड़ की चोटी पर मेरे सामने पेश करो। ”

-परमेश्वर ने मूसा से कहा कि दो नई तख्तियां तराशें, और उन्हें उस पहाड़ पर ले जाएं जहां परमेश्वर ने एक बार फिर अपनी दस आज्ञाएं लिखीं।

-सिनाई पर्वत पर, परमेश्वर ने अपनी दस आज्ञाओं को एक बार फिर नई पत्थर की पट्टियों पर लिखा।

-क्या आपको याद है कि परमेश्वर ने मूसा से कहा था कि इस्राएलियों को उसके लिए एक तम्बू बनाना था?

-कुछ समय बाद इस्राएलियों ने तम्बू को ठीक वैसा ही बनाया जैसा परमेश्वर ने मूसा से कहा था।

आइए पढ़ें निर्गमन 39:42-43 और 40:17

42-इस्राएलियों ने सब काम ठीक वैसे ही किया जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

43-मूसा ने काम का निरीक्षण किया और देखा कि उन्होंने यहोवा की आज्ञा के अनुसार काम किया है। इसलिए मूसा ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

17 सो निवास दूसरे वर्ष के पहिले महीने के पहिले दिन को खड़ा किया गया।

-क्योंकि इस्राएलियों ने तम्बू को ठीक वैसा ही बनाया जैसा परमेश्वर ने उन से कहा था, परमेश्वर का तेज उस तम्बू में प्रवेश किया।

आइए पढ़ें निर्गमन 40:34-35

34 तब बादल ने मिलापवाले तम्बू को ढांप दिया, और यहोवा का तेज निवास में भर गया।

35 मूसा मिलापवाले तम्बू में प्रवेश न कर सका, क्योंकि बादल उस पर छा गया या, और यहोवा का तेज निवासस्थान में भर गया।

-यदि इस्राएलियों ने तम्बू को ठीक वैसे ही न बनाया होता जैसा परमेश्वर ने उन से कहा था, तो क्या परमेश्वर का तेज उस तम्बू में प्रवेश करता?

-नहीं।

-क्योंकि इस्राएलियों ने तम्बू को ठीक वैसा ही बनाया जैसा परमेश्वर ने उन से कहा था, परमेश्वर का तेज उस तम्बू में प्रवेश किया।

-क्या इस्राएलियों को अपने तरीके से परमेश्वर के पास जाना था?

-नहीं।

-इस्राएलियों के पास परमेश्वर के पास जाने का एकमात्र तरीका क्या था?

-परमेश्वर का तरीक़ा।

-हम ईश्वर के मार्ग को कैसे जान सकते हैं?

-परमेश्वर की किताब, बाइबिल के माध्यम से।